

साहित्य यात्रा

साहित्यिक-सांस्कृतिक यात्रा का साक्षी

संपादक

प्रो० कलानाथ मिश्र



सदस्यता फार्म

‘साहित्य यात्रा’ विशिष्ट सदस्यता	:	1100/-
एक वर्ष (4 अंक)	:	500/- (डाक खर्च सहित)
तीन वर्ष (12 अंक)	:	1500/- (डाक खर्च सहित)
संस्थागत मूल्य (3 वर्ष)	:	1500/-
आजीवन सदस्यता	:	15000/-
विदेश के लिए (3 अंक)	:	60 डॉलर

(पटना के बाहर के चेक पर कृपया बैंक कमीशन के 40/- रुपये अतिरिक्त जोड़ दें।)

उक्त दर के अनुरूप मैं चेक / ड्राफ्ट संलग्न कर रहा हूँ। ऑन लाईन खाते में डाल दिया हूँ (रेफरेन्स नं०) कृपया मुझे ग्राहक बना कर मेरी प्रति निम्न पते पर भिजवाएँ।

नाम :-	पद :-
पता :-	
दूरभाष 1 :	दूरभाष 2 :
शहर :	पिन नं० :-
देश :	ईमेल -
संकाय / विभाग / विद्यालय:	

भुगतान की जानकारी

नकद/बैंक रकम: रु०..... द्वारा.....

डी0डी0/प्रत्यक्ष हस्तांतरण/चेक/बैंक का नाम :.....

डी0डी/चेक/स्थानान्तरण संख्या :..... दिनांक :.....

दिनांक:		हस्ताक्षर (या पूरा नाम लिखें)	
---------	--	----------------------------------	--

ऑनलाइन हस्तांतरण विवरण :- साहित्य यात्रा, पंजाब नेशनल बैंक,
एस.के. पुरी शाखा, पटना-1

खाता क्रमांक- 6236000100016263, IFSC- PUNB0623600

वेबसाईट - www.sahityayatra.com



यहाँ से काटिए



साहित्य यात्रा

साहित्यिक-सांस्कृतिक यात्रा का साक्षी

वर्ष-8

अंक-29

जनवरी-मार्च, 2022

परामर्शी

डॉ० सूर्य प्रसाद दीक्षित

डॉ० प्रेम जनमेजय

डॉ० हरीश नवल

डॉ० संजीव मिश्र

सम्पादकीय सलाहकार

श्री आशीष कंधवे

उप-संपादक

प्रो० (डॉ०) प्रतिभा सहाय

डॉ० सत्यप्रिय पाण्डेय

सहायक संपादक

डॉ० रवीन्द्र पाठक

डॉ० करुणा पीटर 'कमल'

अमित कुमार मिश्र

साज-सज्जा

निशिकान्त / मनोज कुमार

संपादक

प्रो० कलानाथ मिश्र



साहित्य यात्रा में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखकों के हैं जिनसे संपादक, प्रकाशक, मुद्रक एवं पत्रिका से जुड़े किसी भी व्यक्ति का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। सभी विवादों का निपटारा पटना क्षेत्र के अन्तर्गत सीमित है। पत्रिका में संपादन से जुड़े सभी पद गैर-व्यावसायिक एवं अवैतनिक है।

साहित्य यात्रा

साहित्यिक-सांस्कृतिक यात्रा का साक्षी

RNI No. : BIHHINO5272

ISSN 2349-1906

विश्व विद्यालय अनुदान आयोग (UGC) द्वारा पूर्व अनुमोदित

विद्वत् संपादक मंडल द्वारा समीक्षित

© स्वत्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशित सामग्री के पुनः उपयोग के लिए लेखक,
अनुवादक अथवा साहित्य यात्रा की स्वीकृति अनिवार्य है।

संपादकीय कार्यालय

‘अभ्युदय’

ई-112, श्रीकृष्णपुरी

पटना-800001 (बिहार)

मोबाइल : 8434880332/09304302308/09835063713

ई-मेल : sahitayatra@gmail.com

kalanath@gmail.com

वेब साईट : <http://www.sahityayatra.com>

मूल्य : ₹ 100/- (एक सौ रुपये मात्र)

प्राप्ति स्थान :

पटना-

आलोक कुमार सिंह, मैग्जीन हाउस, शालीमार स्टूडियो के पास,
सहदेव महतो मार्ग, बोरिंग रोड, पटना-800001

दिल्ली -

1. आर.के. मैग्जीन सेन्टर, क्रिश्चियन कॉलोनी, पटेल चेस्ट,
दिल्ली, वि.वि., दिल्ली-11007
 2. राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, मंडी हाउस, नई दिल्ली
-

शुल्क ‘साहित्य यात्रा’ के नाम पर भेजें।

‘साहित्य यात्रा’ त्रैमासिक डॉ॰ कलानाथ मिश्र के स्वामित्व में और उनके द्वारा ‘अभ्युदय’
ई-112, श्रीकृष्णपुरी, पटना-800001, बिहार से प्रकाशित तथा ज्ञान गंगा क्रियेशन्स, पटना
से मुद्रित। स्वामी/संपादक/प्रकाशक/मुद्रक : प्रो॰ कलानाथ मिश्र।

अनुक्रम

संपादकीय	07
साक्षात्कार	
हिन्दी मूर्धन्य साहित्यकार डॉ. रामदरश मिश्र से साहित्य-यात्रा के संपादक प्रो. कलानाथ मिश्र की अंतरंग बातचीत	13
आत्मकथ्य	
बाल उपन्यासों में हैं बच्चों के मन और सपनों के रंग प्रकाश मनु	22
आलेख	
राजस्थानी कविता में लोक डॉ. नीरज दइया	39
हिन्दी नवजागरण के पुरोधा : शिव पूजन सहाय राजेन्द्र परदेसी	48
साक्षात्कार	
शरद पगारे के साथ प्रतिमा कुशवाहा का साक्षात्कार	52
आलेख	
रामकाव्य परम्परा में रीतिकाल का अवदान डॉ. अशोक कुमार मीणा	63
पत्रकारिता के सामाजिक सरोकार पद्मा मिश्रा	69
हमें सारे जगत् से प्रेम करने वाले मानवतावादी विश्व नागरिक तैयार करने होंगे डॉ. जगदीश गाँधी	75
किस्सागोई की नई सरणियों पर उषा प्रियम्बदा दिशा जगूड़ी	78
पुस्तक समीक्षा	
भावनाओं को गुनगुनाती यथार्थ को बाँचती कहानियों का संग्रह “तिड़क कर टूटना” राजेन्द्र सिंह गहलौत	90

समीक्षा आलेख

- ग्राम और कस्बे के फलक 93
सुषमा मुनीन्द्र

पुस्तक समीक्षा

- समय-समय की कुरुपताओं को प्रतिवाद करते सॉनेट 96
डॉ. वेदप्रकाश अमिताभ

संस्मरण

- जाको राखे साईयाँ 99
डॉ. पद्मावती

कहानी

- और बादल छंट गए 109
सुधा गोयल

आलेख

- विद्रोहविहीन नारियों के अमर गायक : रेणु 116
डॉ. अंजु कुमारी

- दादू वाणी की वर्तमान में प्रासंगिकता 120
डॉ. सुशील राठौड़

- कोरोना काल में बच्चे 128
संगीता कुमारी सहाय

हरित कविता

- वृक्ष ऐसा भी 132
डॉ. मेहता नगेन्द्र

कहानियाँ

- शिकन, दशरथ 133
शिखा ताँती

व्यंग रचना

- मच्छर और मैं 139
प्रभाष पाठक

रिपोर्ट

- रचनाकार स्रष्टा थे विष्णु चंद्र शर्मा 143
मेघ पांडे

स्वर सम्राज्ञी लता मंगेशकर

संगीत और साहित्य दोनों ही मनुष्य के भावों को अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं। इन दोनों के समन्वय से लोकोत्तर सौंदर्य की सृष्टि होती है, जो मानव को परमात्मा की अनुभूति और सत्यम् शिवम् सुंदरम् की प्रतीति कराती है। संगीत वह सम्यक गीत है, जिसमें नृत्य और वाद्य यंत्रों के साथ गायन होता है। संगीत से मन के तार झंकृत होते हैं। आनंद प्रदान करना संगीत का लक्ष्य होता है। इतना ही नहीं मनुष्य के मन में संवेदना जगाना, उदार मनोभावों का संचार करना भी संगीत का लक्ष्य होता है। इस प्रकार संगीत का मुख्य लक्ष्य है रसात्मकता, मानव उत्थान। यही उद्देश्य साहित्य का भी होता है। जहाँ साहित्य का अक्षर और शब्द ब्रह्म से साक्षात् कराता है वहीं संगीत नाद और ताल के माध्यम से हमें ब्रह्म के निकट ले जाता है। वास्तव में साहित्य और संगीत दोनों का चोली-दामन का सा साथ होता है। साहित्य और संगीत दोनों ही मनुष्य के जीवन को सार्थक और सरस बनाते हैं।

भर्तृहरिकृत नीति—शतकम् में कहा गया है—

साहित्य संगीत कला विहीनः साक्षात् पशु पुच्छं विशाणहीना

साहित्य, संगीत और कला से विहीन मनुष्य साक्षात् पशु के सामान है। काव्य रस हो या संगीत रस दोनों में अनुभूति की प्रधानता होती है। इसको अपने अनुभव से समझा जा सकता है। इससे हम जिस रस को ग्रहण करते हैं, वे विभाव, अनुभाव संचारी द्वारा अभिव्यक्त हृदय के भाव और मन में स्थित स्थायीभाव हैं। रस सूत्र के प्रणेता भरतमुनि के अनुसार, **‘विभावानुभावव्यभिचारि संयोगाद्रसनिष्पत्तिः।’**—उनके इस सूत्र का यही आशय है कि विभाव, अनुभाव और स्थायीभाव के संयोग से रस निष्पत्ति होती है।

इसकी व्याख्या करते हुए मम्मट ने नाटक के संबंध में विचार व्यक्त करते हुए कहा कि इसे रस या आनंदात्मक कहते हैं और यही स्थायी भाव की विलक्षण अनुभूति है। यह रसात्मक तादात्म्य जब चरम सीमा तक पहुँच जाता है तो दर्शक उसे